I. उत्पादन

भारत में वृद्धि, अनेक अन्य ईएमडीई की तरह, पिछले दो वर्षों से धीमी बनी हुई है। भारत में गिरावट की अगुआई की है घरेलू संरचनात्मक बाध्यताओं ने, जबकि वैश्विक चक्रीय स्थिति ने इस अड़ंगे में योगदान किया है। तथापि, जैसै-जैसे संरचनात्मक बाधाओं पर ध्यान दिया जा रहा है, वैसे-वैसे कार्यकलाप के स्तर में वर्ष 2013-14 की दूसरी छमाही में सुधार हो सकेगा और वर्ष के अंत तक संयमित गति की आर्थिक पुनःप्राप्ति आकार ग्रहण कर सकती है। अच्छा मानसून होने से बेहतर फसल होने की संभावना, सरकार द्वारा परियोजना कार्यान्वयन को गति प्रदान करने के लिए की गयी पहल और निर्यात में वृद्धि के साथ-साथ बाह्य असंतुलनों में कमी के चलते पुनःप्राप्ति के लिए मंच तैयार हुआ है, लेकिन जमीनी स्तर पर निरंतर कार्रवाई करना, विशेष रूप से परियोजना कार्यान्वयन में तेजी लाना आवश्यक है, ताकि स्थिति में धारणीय बदलाव लाया जा सके।

वैश्विक वृद्धि के निकट भविष्य में मंद बने रहने की संभावना है

I.1 वर्ष 2013 की दूसरी तिमाही में सुधार होने के बावजूद वैश्विक वृद्धि मंदी के पथ पर चलती प्रतीत होती है। अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आइएमएफ) ने अपने वर्ल्ड इकोनॉमिक आउटलुक में अक्तूबर 2013 में वैश्विक वृद्धि के बारे में वर्ष 2013 के लिए अपने अनुमान का अधोमुखी संशोधन करते हुए उसे 0.3 प्रतिशत अंक कम करके 2.9 प्रतिशत पर रखा। यह अधोमुखी संशोधन उभरते बाजार एवं विकासशील अर्थव्यवस्थाओं (ईएमडीई) में, जिसमें चीन और भारत शामिल हैं, धीमी वृद्धि के कारण किया गया है। ईएमडीई का वृद्धि पूर्वानुमान 0.5 प्रतिशत अंक कम करके 4.5 प्रतिशत किया गया है,जबकि उन्नत अर्थव्यवस्थाओं (एई) के लिए पूर्वानुमान 1.2 प्रतिशत पर पूर्ववत है।

I.2 यद्यपि उन्नत और उभरती अर्थव्यवस्थाएँ, दोनों ही धीमी वृद्धि की चुनौतियों का सामना कर रही हैं, फिर भी प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में वर्ष 2013 की दूसरी तिमाही के दौरान एक स्पष्ट सुधार होता दिखाई पड़ा। वर्ष 2013 की दूसरी तिमाही में, अमेरिका की जीडीपी में वृद्धि की गति 2.5 प्रतिशत रही (मौसमी रूप से समायोजित वार्षिकीकृत तिमाही-दर-तिमाही वृद्धि दर, क्यू-ओ-क्यू एसएएआर), जो पहली तिमाही की 1.1 प्रतिशत वृद्धि की तुलना में ऊँची थी (चार्ट I.1 क), जिसका मुख्य कारण था, एक ओर निर्यात में वृद्धि तथा अनिवासी नियत निवेशों में वृद्धि और दूसरी ओर संघीय सरकार के व्यय में थोडी कमी आना। लेकिन अमेरिका में सोलह दिनों की कामबंदी का प्रतिबिंब वर्ष 2013 की चौथी तिमाही में जीडीपी में न्यून वृद्धि में दिखाई पड़ सकता है। संभावित अमरीकी ऋण चुकौती चूक से वैश्विक अर्थव्यवस्था को आसन्न जोखिम टल गयी है, क्योंकि अमरीकी सरकार ने एक ऋण सौदे पर 17 अक्तूबर 2013 को हस्ताक्षर किये। तथापि, आगे बढ़ते हुए अमरीकी पुनःप्राप्ति की धारणीयता का मुद्दा निवेश, शिथिल बाजार स्थिति और बंधक दरों में संभावित वृद्धि के प्रतिवात का सामना करता रहा।

चार्ट I.1 : हाल में कुछ सुधार के बावजूद वैश्विक वृद्धि धीमी बनी रही है

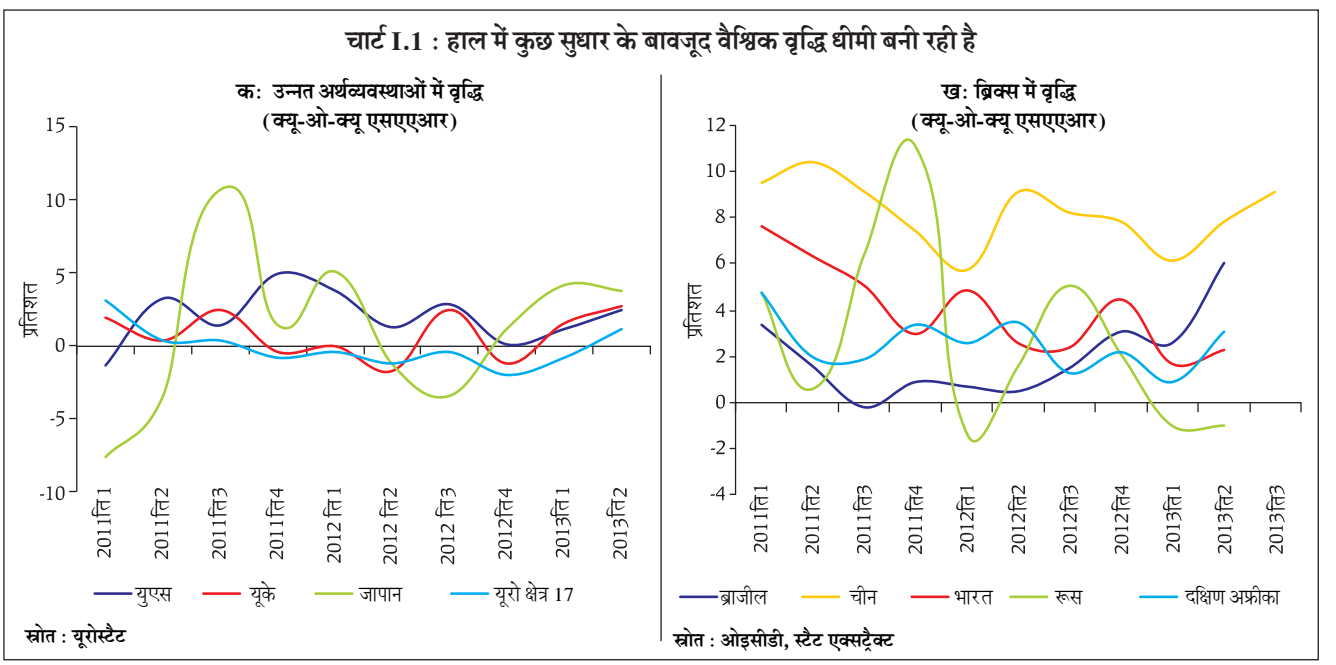

स्रोत : यूरोस्टैट

स्रोत : ओइसीडी, स्टैट एक्सट्रैक्ट

I.3 जापान की अर्थव्यवस्था वर्ष 2013 की दूसरी तिमाही में तीन अटूट तिमाहियों के लिए 3.8 प्रतिशत पर विस्तारित होती रही। यूके ने वर्ष 2013 की दूसरी तिमाही में लगातार दो तिमाहियों से सुधार दर्शाया, जो पहली तिमाही के 1.5 प्रतिशत की तुलना में 2.7 प्रतिशत तक बढ़ी। यूरो क्षेत्र वर्ष 2013 की दूसरी तिमाही 1.1 प्रतिशत बढ़ा (क्यू-ओ-क्यू एसएएआर), जिसे मदद मिली दो सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं, जर्मनी और फ्रांस में तगड़ी वृद्धि से।

I.4 ईएमडीई के बीच चीन की जीडीपी में वर्ष 2013 की तीसरी तिमाही में 9.1 प्रतिशत की वृद्धि हुई (क्यू-ओ-क्यू एसएएआर), जबकि इसमें दूसरी तिमाही में 7.8 प्रतिशत और पहली तिमाही में 6.1 प्रतिशत वृद्धि हुई थी। ब्राजील की जीडीपी में वर्ष 2013 की दूसरी तिमाही में 6.0 प्रतिशत की वृद्धि (क्यू-ओ-क्यू एसएएआर) उम्मीद से बेहतर थी (चार्ट I.1 ख)। फेड की टेपरिंग योजना में विलंब होने से ईएमडीई को मध्यवर्ती समय में उन चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार रहना चाहिए, जो बाद में उभर सकती हैं।

I.5 अमरीकी श्रमिक बाजार की स्थिति अभी तक दुर्बल बनी हुई है, जिसमें बेरोजगारी की दर गिरकर सितंबर 2013 में 7.2 प्रतिशत हो गयी, हालाँकि कृषीतर रोजगार में लगे अतिरिक्त वेतनभोगी कर्मचारियों की संख्या 148,000 पर भी कमजोर थी। यूके के श्रमिक बाजारों में जून-अगस्त के दौरान बेरोजगारी की दर 7.7 प्रतिशत थी, जो मार्च-मई 2013 की तुलना में 0.1 प्रतिशत अंक कम थी। जापान के मामले में, बेरोजगारी की दर अगस्त 2013 में बढ़कर 4.1 प्रतिशत हो गयी, जो जुलाई 2013 में 3.8 प्रतिशत थी। यूरो क्षेत्र में भी बेरोजगारी की दर ऊँची बनी रही और वह अगस्त 2013 में 12.0 प्रतिशत पर अपरिवर्तित थी।

भारतीय अर्थव्यवस्था ने वर्ष 2013-14 की पहली तिमाही में व्यापक गिरावट का सामना किया

I.6 भारतीय अर्थव्यवस्था में गिरावट का दौर वर्ष 2013-14 में बना रहा, जिसमें वृद्धि कम होकर वर्ष 2013-14 की पहली तिमाही में 17 तिमाही के न्यून स्तर 4.4 प्रतिशत पर आ गयी (सारणी I.1)। वृद्धि में यह व्यापक गिरावट सेवाओं तथा कृषि क्षेत्र में नरमी तथा औद्योगिक क्षेत्र में संकुचन को प्रतिबिंबित करती है।

I.7 वर्ष 2011-12 की दूसरी छमाही से मौसमी रूप से समायोजित क्यू-ओ-क्यू एसएएआर वृद्धि दर वर्ष-दर-वर्ष (वाइ-ओ-वाइ) जीडीपी की वृद्धि में गिरावट की प्रवृत्ति के संरेखण में चलती रही है, जिसने वास्तविक अर्थव्यवस्था में अधोमुखी गति को संपुष्ट किया है (चार्ट I.2)। उत्पादन अंतराल

सारणी I.1: वृद्धि में व्यापक गिरावट हुई है

जीडीपी की क्षेत्रवार वृद्धि दर (2004-05 के मूल्य पर)

(प्रतिशत)

उद्योग	2011-12*	2012-13#	2012-13				2013-14
			ति1	ति2	ति3	ति4	ति1
1	2	3	4	5	6	7	8
1. कृषि, वानिकी और मत्स्यपालन	**3.6**	**1.9**	**2.9**	**1.7**	**1.8**	**1.4**	**2.7**
2. उद्योग	**2.7**	**1.2**	**-0.2**	**0.5**	**2.3**	**2.0**	**-0.9**
2.1 खनन एवं उत्खनन	-0.6	-0.6	0.4	1.7	-0.7	-3.1	-2.8
2.2 विनिर्माण	2.7	1.0	-1.0	0.1	2.5	2.6	-1.2
2.3 बिजली, गैस और जलापूर्ति	6.5	4.2	6.2	3.2	4.5	2.8	3.7
3. सेवाएँ	**7.9**	**6.8**	**7.6**	**7.1**	**6.2**	**6.3**	**6.2**
3.1 व्यापार, हॉटेल, परिवहन और संचार	7.0	6.4	6.1	6.8	6.4	6.2	3.9
3.2 वित्तपोषण, बीमा, स्थावर संपदा और कारोबारी सेवाएँ	11.7	8.6	9.3	8.3	7.8	9.1	8.9
3.3 सामुदायिक, सामाजिक और वैयक्तिक सेवाएँ	6.0	6.6	8.9	8.4	5.6	4.0	9.4
3.4 निर्माण	5.6	4.3	7.0	3.1	2.9	4.4	2.8
4. कारक लागत पर जीडीपी	**6.2**	**5.0**	**5.4**	**5.2**	**4.7**	**4.8**	**4.4**

*: पहला संशोधित अनुमान #: अनंतिम अनुमान
स्रोत : केंद्रीय सांख्यिकी कार्यालय (सीएसओ)

चार्ट I.2 : वास्तविक अर्थव्यवस्था का अधोमुखी संवेग वृद्धि का संवेग संकेतक

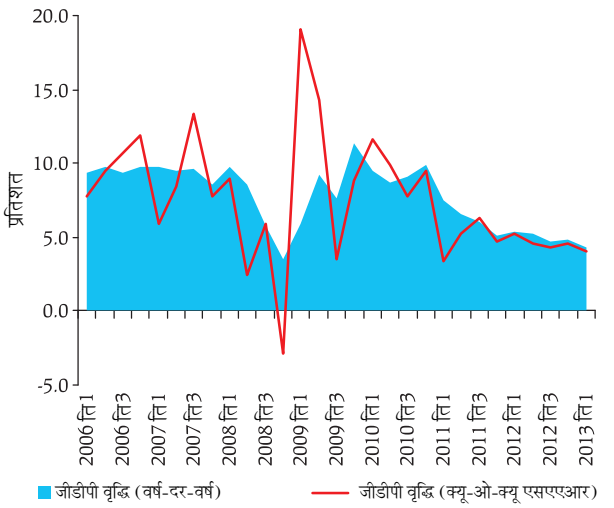

भी ऋणात्मक बना रहा (चार्ट I.3)। आपूर्ति की बाध्यताएँ, उच्च मुद्रास्फीति, चक्रीय कारक और न्यून बाह्य माँग ने इस गिरावट में योगदान किया।

कृषि वृद्धि में उछाल होने की उम्मीद है

I.8 वर्ष 2013-14 के दौरान कृषि उत्पादन में अभिप्रेत वृद्धि से ऊपर वृद्धि होने की उम्मीद है (सारणी I.2)। खाद्यान्नों के उत्पादन का पहला अग्रिम अनुमान बताता है कि खरीफ खाद्यान्न की पैदावार 129.3 मिलियन टन होगी, जो पिछले वर्ष के पहले अग्रिम अनुमान से 10.3 प्रतिशत अधिक और चौथे अग्रिम अनुमान से 0.9 प्रतिशत अधिक वृद्धि दर्शाता है। तिलहनों के उत्पादन में भी काफी बढ़ोतरी होने की उम्मीद है।

I.9 एक सामान्य और समान रूप से वितरित दक्षिण-पश्चिम मानसून ने बढ़िया फसल होने की संभावना को प्रबलित किया। जून-सितंबर 2013 के दौरान वर्षा सामान्य से 6 प्रतिशत अधिक हुई। 36 मौसमी उप विभागों में से तीस उपविभागों में, जो देश का 86 प्रतिशत हिस्सा होते हैं, सामान्य या अधिक वर्षा हुई। वर्षा में कमी पूर्वी और उत्तर-पूर्वी क्षेत्रों एवं हरियाणा तक सीमित थी। रबी की फसल के लिए भी अच्छी संभावना है, जिसमें 17 अक्तूबर 2013 की स्थिति के अनुसार 85 प्रमुख जलाशयों में जल भंडारण का स्तर पिछले वर्ष के स्तर से 16.3 प्रतिशत ऊँचा है। आलोच्य अवधि के लिए रिज़र्व बैंक का खाद्यान्न के लिए उत्पादन भारित वर्षा सूचकांक सामान्य के 102 प्रतिशत पर रहा, जबकि यह पिछले वर्ष 87 प्रतिशत था (चार्ट I.4)। यही सूचकांक तिलहनों (125), गन्ना (109) और कपास (126) के लिए भी ऊँचा था। खरीफ फसल में सुधार होने से खाद्यान्न की कीमतों पर दबाव को कम करने में मदद मिल सकती है।

I.10 चावल और गेहूँ का वर्तमान स्टॉक 53 मिलियन टन (मध्य अक्तूबर 2013 तक) है और वह बफर मानदंडों को तथा विभिन्न गरीबी उन्मूलन योजनाओं के अंतर्गत अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए पर्याप्त है। इन स्टॉकों का अल्पावधि में मूल्य प्रबंधन के लिए बेहतर उपयोग किया जा सकता है, जिसमें भंडारण संबंधी उन बाध्यताओं पर ध्यान रखना होगा, जो दूसरी भरपूर फसल के बाद सामने आ सकती हैं। तथापि, अखिल भारतीय स्तर

चार्ट I.3 : उत्पादन अंतराल ऋणात्मक बना रहा

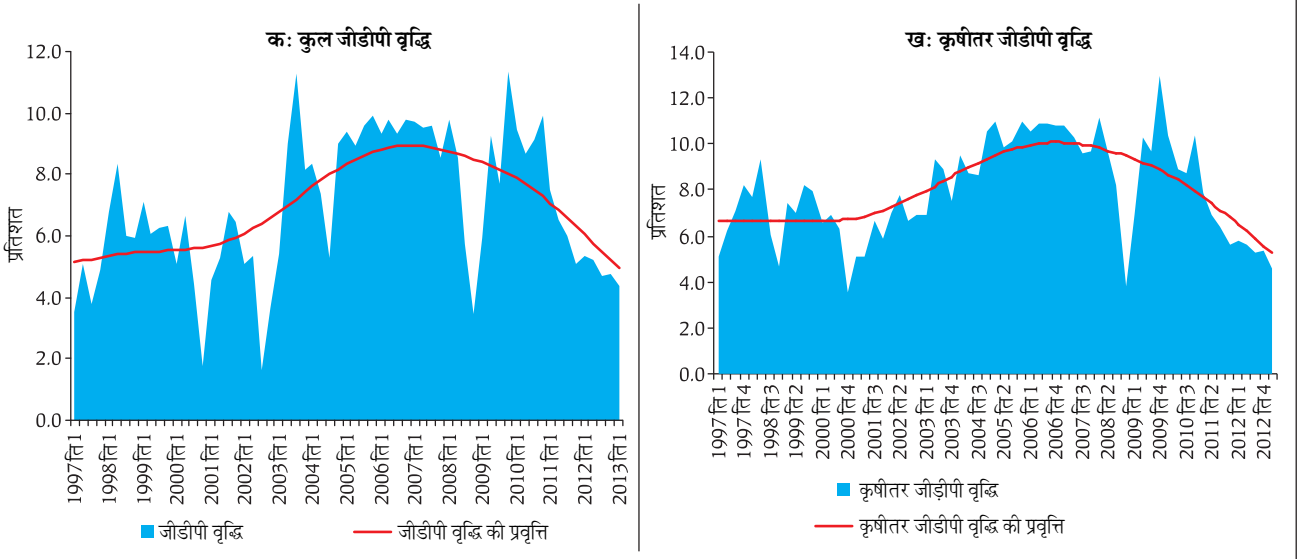

टिप्पणी : प्रवृत्ति हॉड्रिक-प्रेस्कॉट फिल्टर पर आधारित है

सारणी I.2: आरंभिक अनुमान खरीफ उत्पादन में उछाल इंगित करते हैं.

खरीफ की बुआई और उत्पादन में प्रगति

(क्षेत्रफल मिलियन हेक्टेयर और उत्पादन मिलियन टन में)

फसल	बुआई अक्तूबर 25			उत्पादन			प्रतिशत परिवर्तन		
	इस तिथि तक सामान्य	2013	2012	2013-14*	2012-13*	2012-13@	बुआई 2013 (स्तंभ 3/स्तंभ 4)	उत्पादन 2013-14 (स्तंभ 5/स्तंभ 6)	उत्पादन 2013-14 (स्तंभ 5/स्तंभ 7)
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
खाद्यान्न	**67.6**	**68.7**	**65.6**	**129.3**	**117.2**	**128.2**	**4.7**	**10.3**	**0.9**
चावल	36.6	38.4	37.5	92.3	85.6	92.8	2.4	7.8	-0.5
मोटा अनाज	20.1	19.6	17.8	31.0	26.3	29.5	10.1	17.9	5.1
मक्का	7.3	8.2	7.5	17.8	14.9	16.0	9.3	19.5	11.3
दालें	10.9	10.7	10.3	6.0	5.3	5.9	3.9	13.2	1.7
तूर	3.8	4.0	3.7	3.0	2.8	3.1	8.1	7.1	-3.2
उड़द	2.4	2.6	2.5	1.3	1.1	1.4	4.0	18.2	-7.1
तिलहन	17.8	19.5	17.7	24.0	18.8	20.9	10.2	27.7	14.8
मूँगफली	4.6	4.3	3.9	5.6	3.8	3.1	10.3	47.4	80.6
सोयाबीन	9.5	12.2	10.7	15.7	12.6	14.7	14.0	24.6	6.8
गन्ना	4.7	4.9	5.0	341.8	335.3	339.0	-2.0	1.9	0.8
कपास#	11.6	11.5	11.7	35.3	33.4	34.0	-1.7	5.7	3.8
जूट और मेस्टा##	0.9	0.9	0.9	11.2	11.3	11.3	0.0	-0.9	-0.9
सभी फसलें	**102.5**	**105.5**	**100.9**	**-**	**-**	**-**	**4.6**	**-**	**-**

#: मिलियन गाँठ, प्रत्येक गाँठ 170 कि.ग्रा. की ##: मिलियन गाँठ, प्रत्येक गाँठ 180 कि.ग्रा. की -: उपलब्ध नहीं

*: पहला अग्रिम अनुमान @: चौथा अग्रिम अनुमान

स्रोत : कृषि मंत्रालय, भारत सरकार

पर राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम के चरणबद्ध कार्यान्वयन के साथ खाद्यान्नों के प्रत्याशित अधिक उठाव को ध्यान में रखते हुए मध्यावधि में खाद्यान्न प्रबंध नीति का पुनर्मूल्यांकन करना आवश्यक होगा।

चार्ट I.4 : रिज़र्व बैंक का उत्पादन भारित वर्षा सूचकांक सामान्य मानसून इंगित करता है

वर्षा सूचकांक

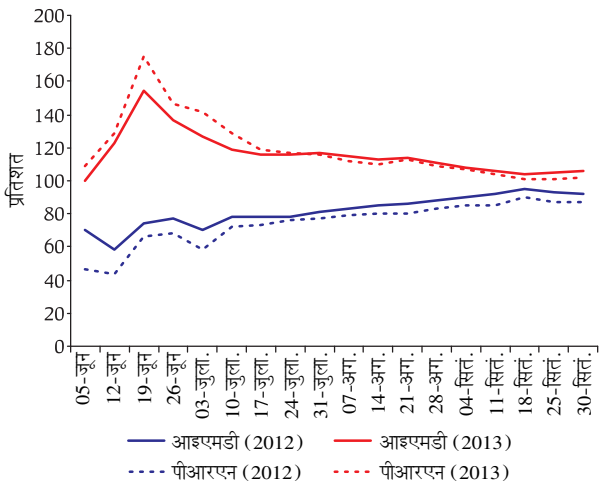

चार्ट I.5 :खाद्यान्न स्टॉक बफर मानदंडों को पूरा करने के लिए पर्याप्त है

खाद्यान्न स्टॉक और इसके निर्धारक

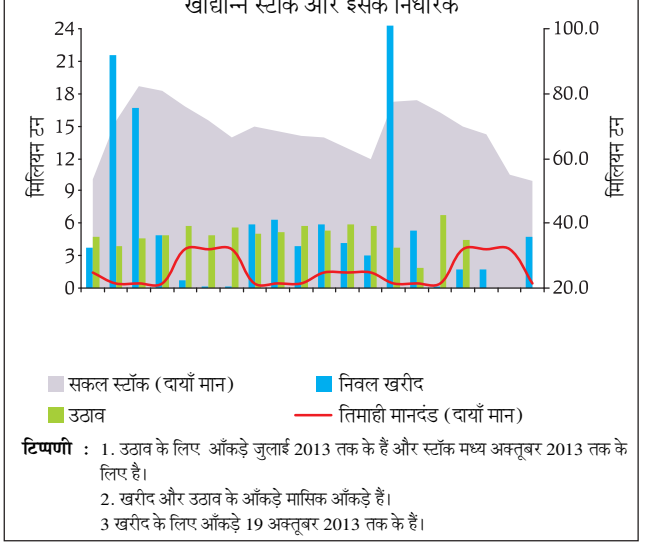

टिप्पणी : 1. उठाव के लिए आँकड़े जुलाई 2013 तक के हैं और स्टॉक मध्य अक्तूबर 2013 तक के लिए है।
2. खरीद और उठाव के आँकड़े मासिक आँकड़े हैं।
3 खरीद के लिए आँकड़े 19 अक्तूबर 2013 तक के हैं।

चार्ट I.6 : औद्योगिक क्षेत्र का धीमा कार्य-संपादन
औद्योगिक वृद्धि (वाइ-ओ-वाइ)

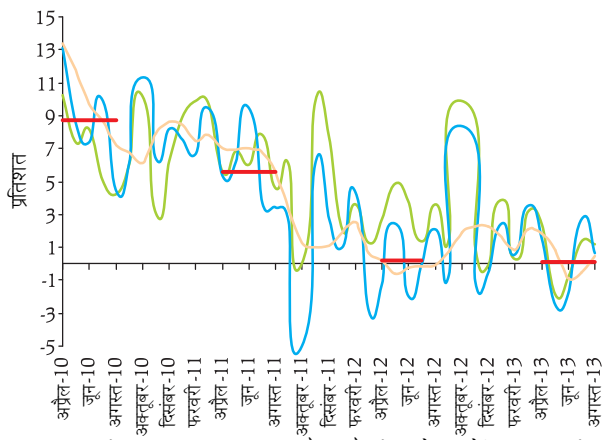

चार्ट I.7 : संक्षिप्त आइआइपी संकुचन दर्शाता है
संक्षिप्त आइआइपी की तुलना में आइआइपी (वाइ-ओ-वाइ)
(अप्रैल-अगस्त 2013)

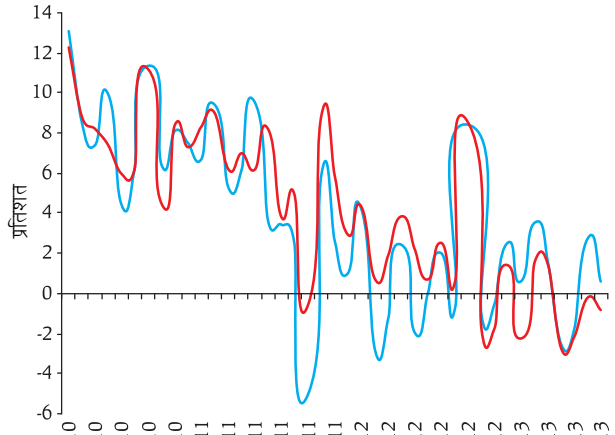

औद्योगिक कार्यकलाप आपूर्ति-जन्य अड़चनों के चलते निरुद्ध बने हुए हुए हैं

I.11 अप्रैल-अगस्त 2013 के लिए औद्योगिक उत्पादन सूचकांक (आइआइपी) में सीमांतिक रूप से 0.1 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई। खनन एवं विनिर्माण क्षेत्रों में संकुचन औद्योगिक वृद्धि के समग्र कार्यसंपादन को मंद करने के लिए मुख्य कारक रहा। पूँजीगत वस्तुओं और खनन क्षेत्र को छोड़ कर आइआइपी इस अवधि के दौरान 0.5 प्रतिशत बढ़ा (चार्ट I.6)। अस्थिर मदों, यथा 'केबुल, रबर इन्सुलेटेड', 'एट्रेजिन', 'विटामिन्स', 'खाद्य प्रसंस्करण मशीनें', आदि को छोड़ कर संक्षिप्त आइआइपी (आइआइपी का 96 प्रतिशत) वृद्धि अप्रैल-अगस्त के दौरान 0.9 प्रतिशत पर ऋणात्मक थी (चार्ट I.7)।

I.12 जबकि खनन क्षेत्र में गिरावट वर्ष 2011-12 से जारी है, विनिर्माण क्षेत्र में अप्रैल-अगस्त 2013 के दौरान संकुचन मुख्य रूप से मशीनरी एवं उपस्कर; लेखांकन एवं कंप्यूटिंग मशीनें; मूलभूत धातुएँ; फैब्रिकेटेड धातु उत्पाद; रेडियो, टीवी, संचार उपस्कर; और मोटर वाहन में गिरते उत्पादन से चालित था। खनन क्षेत्र के उत्पादन में गिरावट, विशेष रूप से कोयले में, ने ताप विद्युत उत्पादन को प्रभावित किया, जो पिछले वर्ष के 8.6 प्रतिशत की तुलना में कम होकर अप्रैल-अगस्त 2013 में 1.8 प्रतिशत पर आ गया। तथापि, जल-विद्युत का उत्पादन इस वर्ष स्पष्ट रूप से बेहतर होने की उम्मीद है, क्योंकि जलाशयों में जल की पुनःपूर्ति हुई है। जल-विद्युत में अप्रैल-अगस्त 2013 के दौरान 20 प्रतिशित वाइ-ओ-वाइ वृद्धि हुई।

I.13 उपयोग आधारित उद्योगों के संदर्भ में, उपभोक्ता टिकाऊ वस्तुएँ और मूलभूत वस्तुएँ, जिनका एक साथ मिल कर आइआइपी में भारांक 54 प्रतिशत है, अपनी समग्र वृद्धि को नीचे ले गयीं (सारणी I.3)।

प्रमुख उद्योगों ने पिछले दो महीनों में कुछ सुधार दर्शाया है

I.14 आठ प्रमुख उद्योगों का उत्पादन लगातार दो महीनों तक सुधरा, जिसमें अगस्त 2013 में 3.7 प्रतिशत वाइ-ओ-वाइ वृद्धि दर्ज की गयी। नवीनतम आँकड़े प्रमुख उद्योगों के उत्पादन में तेजी दर्शाते हैं, जिसकी अगुआई इस्पात, सीमेंट और बिजली

चार्ट I.8 : प्रमुख उद्योगों की वृद्धि में वर्ष 2013-14 में अब तक गिरावट आयी है
प्रमुख उद्योगों में क्षेत्रवार वृद्धि

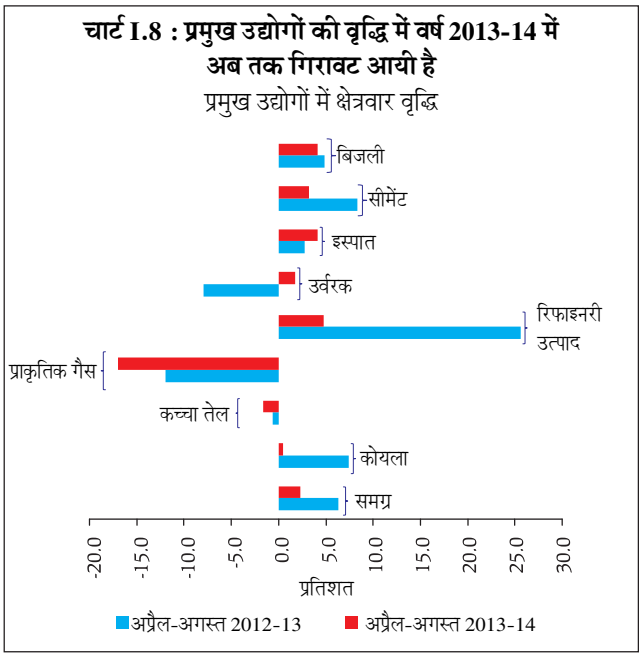

सारणी I.3: व्यापक औद्योगिक गिरावट की अगुआई उपभोक्ता टिकाऊ वस्तुओं ने की
आइआइपी का क्षेत्रीय और उपयोग आधारित वर्गीकरण

(प्रतिशत)

उद्योग समूह	आइआइपी में भारांक	वृद्धि दर		
		अप्रै.- मार्च 2012-13	अप्रैल-अगस्त	
			2012-13	2013-14अ
1	2	3	4	5
क्षेत्रीय				
खनन	14.2	-2.3	-1.8	-3.4
विनिर्माण	75.5	1.3	0.0	-0.1
बिजली	10.3	4.0	4.8	4.5
उपयोग आधारित				
मूल सामान	45.7	2.5	2.7	0.5
पूँजीगत सामान	8.8	-6.0	-14.4	0.8
मध्यवर्ती सामान	15.7	1.6	1.0	2.3
उपभोक्ता सामान (क+ख)	29.8	2.4	3.2	-1.6
क) उपभोक्ता टिकाऊ वस्तुएँ	8.5	2.0	5.1	-11.0
ख) उपभोक्ता गैर टिकाऊ वस्तुएँ	21.3	2.8	1.6	6.6
सामान्य	**100**	**1.1**	**0.2**	**0.1**

अ : अनंतिम
स्रोत : केंद्रीय सांख्यिकी कार्यालय

उद्योगों ने की। तथापि, वर्ष-से-तिथि (वाइटीडी) आधार पर आठ प्रमुख उद्योगों की वृद्धि में गिरावट आ कर वह अप्रैल-अगस्त 2013 के दौरान 2.3 प्रतिशत हो गयी, जबकि पिछले वर्ष की तदनुकूल अवधि के दौरान वह 6.3 प्रतिशत थी (चार्ट I.8)। अप्रैल-अगस्त 2013 के दौरान ताप-विद्युत में गिरावट अखिल भारतीय प्लांट भार में गिरावट (पीएलएफ) में प्रतिबिंबित होती है, जो पिछले वर्ष के 69.8 प्रतिशत से घट कर 64.1 प्रतिशत हो गयी।

क्षमता उपयोग में नरमी

I.15 क्षमता उपयोग (सीयु), जिसका मापन रिज़र्व बैंक के आर्डर बुक इन्वेटरीज एंड कैपेसिटी युटिलाइजेशन सर्वे (ओबीआइसीयुएस) के 22वें दौर द्वारा किया जाता है, ने वर्ष 2013-14 की पहली तिमाही में उसकी पिछली तिमाही की तुलना में मौसमी गिरावट दर्ज की (http://www.rbi.org.in/OBICUS22)। सीयु और डिट्रेंडेड औद्योगिक उत्पादन सूचकांक में व्यापक सह-संचलन है (चार्ट I.9)। पिछली दो तिमाहियों में अनुक्रमिक बढ़ोतरी के बाद नये आर्डरों में वर्ष

चार्ट I.9 : क्षमता उपयोग (सीयू) ने वर्ष 2013-14 की पहली तिमाही में मौसमी गिरावट दर्ज की (क्षमता उपयोग (सीयू) और डिट्रेंडेड आइआइपी (विनिर्माण)

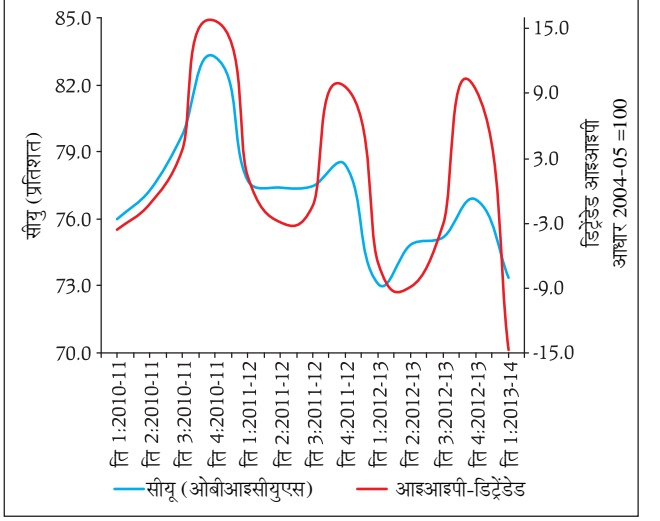

2013-14 की पहली तिमाही में क्यू-ओ-क्यू और वाइ-ओ-वाइ, दोनों आधारों पर गिरावट दर्ज की गयी। विक्रय की तुलना में तैयार माल इन्वेटरी अनुपात में वर्ष 2013-14 की पहली तिमाही में बढ़ोतरी हुई और यह पिछले वर्ष की तुलना में ऊँचा था।

अग्रणी संकेतक सेवा-क्षेत्र की वृद्धि के संबंध में मिश्रित चित्र प्रस्तुत करते हैं

I.16 सेवा-क्षेत्र में वर्ष 2013-14 की पहली तिमाही के दौरान 6.2 प्रतिशत की दर से वृद्धि हुई, जबकि पिछले वर्ष की इसी अवधि में यह वृद्धि 7.6 प्रतिशत हुई थी। इसका मुख्य कारण था 'निर्माण' और 'व्यापार, हॉटेल, रेस्तराँ, परिवहन और संचार' क्षेत्रों में वृद्धि का नरम होना। सेवा-क्षेत्र के अग्रणी संकेतकों की गतिविधियाँ मिश्रित चित्र प्रस्तुत करती हैं। यात्री और वाणिज्यिक वाहनों की बिक्री में और उड्डयन उद्योग के कुछ खंडों में संकुचन हुआ, भले ही पर्यटक आगमन, रेलवे राजस्व अर्जक मालभाड़े तथा इस्पात-उत्पादन में सुधार के संकेत दिखाई पड़े (सारणी I.4)। रिज़र्व बैंक का सेवा-क्षेत्र संमिश्र संकेतक, जो निर्माण, व्यापार एवं परिवहन तथा वित्त के संकेतकों में वृद्धि पर आधारित होता है, वर्ष 2013-14 की पहली तिमाही में गिरावट दर्शाता है, लेकिन इसमें जुलाई-अगस्त में कुछ तेजी देखी गयी (चार्ट I.10)।

रोजगार परिदृश्य वर्ष 2013-14 की पहली तिमाही में दुर्बल बना हुआ है

I.17 आठ प्रमुख क्षेत्रों में श्रम-ब्यूरो के सर्वेक्षण के अनुसार, रोजगार सृजन में नरमी, जो वर्ष 2012 में आरंभ हुई थी, वह वर्ष

सारणी I.4: अग्रणी संकेतक धीमे सेवा-क्षेत्र कार्यकलाप की ओर संकेत करते हैं

सेवा-क्षेत्र कार्यकलाप के संकेतक

(प्रतिशत वृद्धि)

सेवा क्षेत्र संकेतक	2010-11	2011-12	2012-13	अप्रैल-सितंबर 2012-13	अप्रैल-सितंबर 2013-14
1	2	3	4	5	6
पर्यटक आगमन	10.0	9.7	2.1	1.7	4.3
सीमेंट	4.5	6.7	8.4	8.3#	3.2#
इस्पात	13.2	10.3	2.5	2.8#	4.1#
ऑटोमोबाइल बिक्री	16.8	11.1	2.6	3.5	1.2
रेलवे राजस्व अर्जक मालभाड़े की प्राप्ति	3.8	5.2	4.1	4.8	6.2
प्रमुख बंदरगाहों में कार्गो प्रबंध	1.5	-1.6	-2.5	-3.3	2.3
नागरिक उड्डयन					
देशी कार्गो प्रबंध	23.8	-4.8	-3.4	3.8*	-3.0*
अंतरराष्ट्रीय कार्गो प्रबंध	17.7	-1.9	-4.2	-4.2*	-1.7*
अंतरराष्ट्रीय टर्मिनल में यात्रियों का प्रबंध	10.3	7.6	5.5	3.2*	11.0*
देशी टर्मिनल मे यात्रियों का प्रबंध	18.1	15.1	-4.3	-0.8*	2.3*

#: आँकड़े अप्रैल-अगस्त 2013 के हैं; *: आँकड़े अप्रैल-जुलाई 2013 के हैं

स्रोत : सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय, पर्यटन मंत्रालय, प्रेस सूचना ब्यूरो, इंडियन पोर्ट्स एसोसिएशन, एसआइएएम और सीएमआइई

2013-14 की पहली तिमाही में जारी रही (चार्ट I.11)। रोजगार सृजन में गिरावट विशेष रूप से आइटी/बीपीओ क्षेत्र में तेज हुई, जो वैश्विक गिरावट और बढ़ते संरक्षणवाद को प्रतिबिंबित करती है। क्षेत्रवार, सिवाय वस्त्र और चमड़ा के, किसी अन्य क्षेत्र ने वर्ष 2013-14 की पहली तिमाही के दौरान अनुक्रमिक आधार पर रोजगार सृजन में कोई बोधगम्य सुधार नहीं दर्शाया।

चार्ट I.10 : सेवा-क्षेत्र संमिश्र संकेतक ने जुलाई-अगस्त 2013 में थोड़ी तेजी दर्शायी

सेवा-क्षेत्र संमिश्र संकेतक

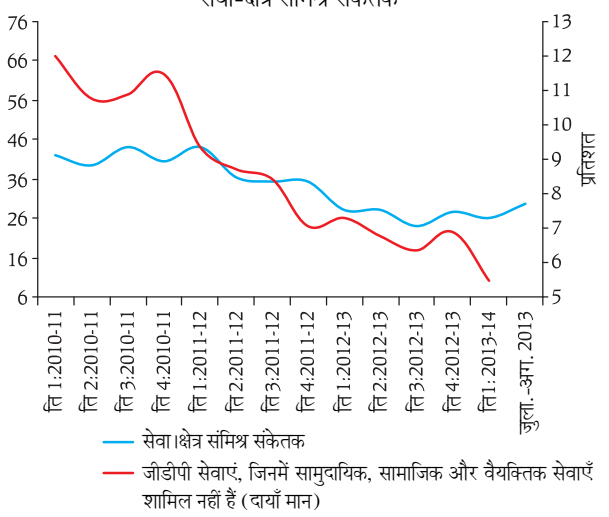

चार्ट I.11 : आठ प्रमुख क्षेत्रों में वर्ष 2013-14 की पहली तिमाही में रोजगार सृजन में नरमी बनी रही

आठ प्रमुख क्षेत्रों में रोजगार सृजन

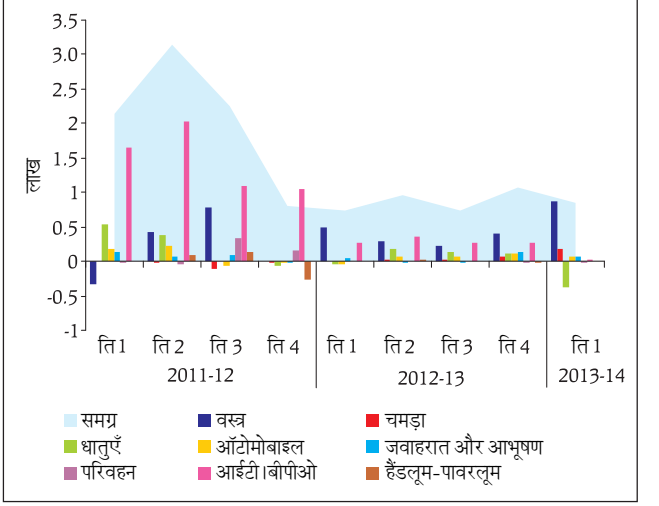

दूसरी छमाही के दौरान संयत पुन:प्राप्ति की उम्मीद है, जो मुख्यत: कृषि-उत्पादन और निर्यात में तेजी से समर्थित होगी

I.18 भारतीय अर्थव्यवस्था में वर्ष 2013-14 की दूसरी छमाही के दौरान बेहतर कार्यसंपादन की उम्मीद है, जो अच्छे मानसून की पृष्ठभूमि में होगी, जिसने खरीफ की संभावना को बढ़ावा दिया है। अच्छी फसल होने का सकारात्मक प्रभाव ग्रामीण माँग पर होगा, जो बदले में मंद पड़े औद्योगिक और सेवा-क्षेत्रों में सुधार लाने में मदद करेगा। पुन:, उन्नत खरीफ फसल से आपूर्ति पक्ष की बाध्यताओं के कम होने और इसलिए खाद्यान्न की कीमतों पर दबाव को कम करने में मदद मिलेगी। विनिमय दर समायोजन के साथ निर्यात में तेजी आयी है, हालाँकि वैश्विक वृद्धि धीमी बनी हुई है। नीति के मोर्चे पर सरकार ने कतिपय क्षेत्रों, विशेष रूप से आधारभूत संरचना क्षेत्र, में अनेक नीतिगत उपक्रमण आरंभ किये हैं, जिनसे समग्र निवेश माहौल में सुधार होने की उम्मीद की जाती है। तथापि, इन कार्रवाइयों को जमीनी स्तर पर कार्यकलाप में रूपांतरित होने में कुछ समय लगेगा। अत:, वर्ष 2013-14 की दूसरी छमाही में कार्यकलाप के स्तर पर संयत सुधार होने की उम्मीद है, हालाँकि पुन:प्राप्ति वर्ष के अंत तक आकार ग्रहण कर सकेगी, यदि वर्तमान सकारात्मक गति बनाये रखी जा सके।